B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

भू-वैन्यासिक संगठन" (Spatial organisation)

भू-वैन्यासिक संगठन के कार्यात्मकस्वरूप का अध्ययन आर्थिक भूगोल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। रिचार्ड मॉरिल- के अनुसार- भू-वैन्यासिक संगठन का तात्पर्य 'मानव समाज द्वारा क्षेत्र में समाकलित उपयोग (Aggregate use of space by Society) है। दूसरे शब्दों में अर्थतन्त्र का क्षेत्रीय संगठन, मानव कार्य-कलाप के परस्पर अन्तर्सम्बन्धित पुंज (clusters of human activities interrelated with each other) का द्योतक है जिसके निम्न तीन प्रमुख संघटक हैं-

(i) ग्रामीण एवं नगरीय अधिवास- जो कृषि, खनिज, व्यापार उद्योग एवं विभिन्न सेवाओं के नाभिक होते हैं। ये अधिवास मानव के, आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक अन्तर्क्रिया के पुंजीभूत प्रतिरूप होते हैं। उक्त अन्तर्क्रिया के स्वरूप एवं गहनता में विभिन्नता के अनुसार इनकी सापेक्षिक स्थिति, वितरण, आकार एवं कार्य संगठन में भिन्नता मिलती है।

(ii) अधिवासों को अन्तर्सम्बन्धित करने वाले यातायात तथा संचार के साधन तथा

(iii) भूमि का उपयोग करने वाले, कृषि, उद्योग आदि कार्यों का वितरण एवं गहनता प्रतिरूप किसी भी सकेन्द्रीय प्रदेश (Nodal Region) की परिसीमा में जिसका निरूपण किसी केन्द्र स्थल के चतुर्दिक कार्यात्मक संगठन के आधार पर किया जाता है। और फलस्वरूप ऐसा प्रदेश आर्थिक तन्त्र के संगठनात्मक स्वरूप के अध्ययन हेतु सार्थक आधार प्रस्तुत करता है।

अर्थतन्त्र का संगठन, आवागमन, और परिचलन (movement) से प्रारम्भ होता है। आवागमन प्रत्येक दिशा में एवं प्रत्येक स्थान पर निर्बाध अथवा सुगमता से सम्भव नहीं है। इसलिए आवागमन के कुछ मार्ग बन जाते हैं। ये मार्ग परस्पर ग्रंथित होकर मार्ग-जाल (Route Network) के रूप में भू-दृश्य में प्रकट होते हैं। मार्गजाल के संगम स्थलों (Interconnections) पर केन्द्र स्थल (Nodal or Central points) होते हैं। जो कालक्रम में पदानुक्रम (Hierarchy) विन्यास में परस्पर आबद्ध (Nested Central places) होते हैं।

अन्ततः पदानुक्रम स्तर के अनुरूप प्रत्येक केन्द्र स्थल एवं उसके प्रभाव क्षेत्र (Sphere of Influence) के अन्तर्गत विभिन्न गहनता स्तर के भूमि उपयोग उभर आते हैं। भूमि उपयोग गहनता के अनुरूप उद्योग, व्यापार, कृषि आदि व्यवसायों का समायोजन होता है।

(भू-वैन्यासिक संगठन का मॉडल)

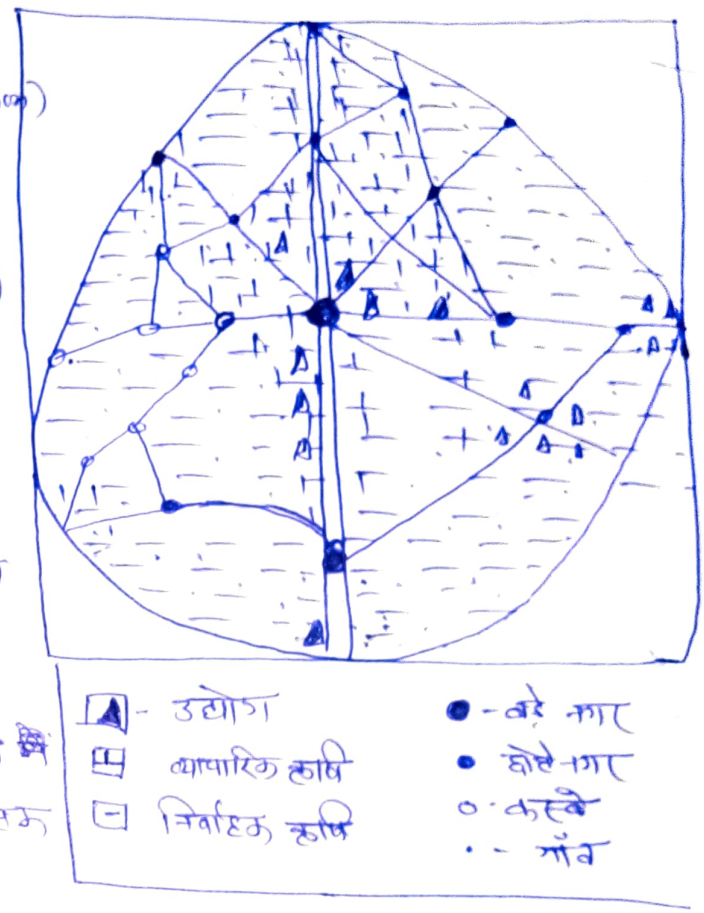

विभिन्न प्रदेशों में अर्थतन्त्र के भू-वैन्यासिक संगठन (Spatial organisation) प्रतिरूपों में भिन्नता मिलना अवश्यम्भावी है। क्योंकि अर्थतन्त्र का सामान्य स्वरूप संसाधन समुच्चय (Resource complex) एवं उसके क्षेत्रीय वितरण पर निर्भर करता है।

इस प्रकार भू-वैन्यासिक संगठन से तात्पर्य - विभिन्न मानव अर्थकलाप की परस्पर अन्तर्सम्बन्धित अवस्थिति (Interrelated locations of Human activities) से है।

भू-वैन्यासिक संगठन की प्रक्रिया की व्याख्या में उस प्रदेश के ऐतिहासिक पक्षों पर भी ध्यान देना पड़ता है।

वस्तुतः लवर द्वारा प्रस्तुत भू-दृश्य की आकारिकी की व्याख्या एवं भू-वैन्यासिक संगठन में बहुत कम अन्तर रह जाता है। भूदृश्य में विभिन्न तत्वों के, जो भू-दृश्य के अन्तर्गत शामिल होते हैं, पारस्परिक सम्बन्ध पर कम जोर था तथा उसमें ऐतिहासिक वाद (Historicism) का अधिक पुट था। भू-वैन्यासिक संगठन की संकल्पना में निरपेक्ष वैज्ञानिकता जो प्रत्यक्षवाद (Positivism) की उपज थी का दृष्टिकोण प्रमुख हो जाता है।